ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)–848125

बुलेटिन संख्या–08
दिनांक– मंगलवार, 27 जनवरी, 2026

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेधशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 25.2 एवं 8.8 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 99.0 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 55.0 प्रतिशत, हवा की औसत गति 7.5 कि0मी0 प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पन 1.6 मि0मी0 तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 5.5 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से0मी0 की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 13.8 एवं दोपहर में 22.7 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(28 जनवरी–01 फरवरी, 2026)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 28 जनवरी–01 फरवरी, 2026 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमान की अवधि में मौसम के आमतौर पर शुष्क रहने का अनुमान है। हालाकि 29 जनवरी को उत्तर बिहार के कुछ जिलो जैसे मुजफ्फरपुर, सिवान, गोपालगंज, पूर्वी तथा पश्चिम चम्पारण जिलों में गरज वाले बादल बन सकते है जिसके कारण कुछ स्थानों पर हल्की बुंदा–बादी हो सकती है। वर्षा के दौरान तेज हवा भीं चल सकती है।
- अधिकतम तापमान 23 से 25 डिग्री सेल्सियस तथा न्यूनतम तापमान 10 से 12 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है।
- पूर्वानुमानित अवधि में पछिया हवा चलने का अनुमान है। औसतन 6–12 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से हवा चलने की संभावना है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 90 प्रतिशत तथा दोपहर में 40 से 45 प्रतिशत रहने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- पूर्वानुमानित अवधि में 29 जनवरी के आसपास उत्तर बिहार के कुछ जिलो जैसे सिवान, गोपालगंज, पूर्वी तथा पश्चिम चम्पारण जिलों में गरज वाले बादल बन जिसके कारण कुछ स्थानों पर हल्की बुंदा–बादी होने सम्भावना को देखते हुए इन जिलों के किसान भाई किसानी कार्य सावधानी पूर्वक करें तथा अन्य जिलों में मौसम के शुष्क बने रहने की संभावना को देखते हुए कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि अगात प्रभेद की जो फसलें पककर तैयार हो चुकी हैं, जैसे हल्दी एवं ओल, उनकी समय पर खुदाई कर लें, ताकि उपज की गुणवत्ता बनी रहे और किसी प्रकार की क्षति से बचा जा सके।
- पिछात बोई गई गेहूँ की फसल में इस समय जिंक की कमी के लक्षण सामान्य रूप से दिखाई देते हैं, जैसे पत्तियों का हल्का पीला पड़ना, पत्तियों पर सफेद या पीली धारियाँ बनना तथा पौधों की बढ़वार का रुक जाना। इसके लिए 2.5 किलोग्राम जिंक सल्फेट, 1.25 किलोग्राम बुझा हुआ चुना तथा 12.5 किलोग्राम यूरिया को 500 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से 15 दिन के अंतराल पर दो बार छिड़काव करें। छिड़काव हमेशा साफ मौसम में करें। यदि फसल में दीमक का प्रकोप दिखाई दे, तो क्लोरपायरीफॉस 20 ई.सी. की 2 लीटर मात्रा प्रति एकड़ 20–30 किलोग्राम सूखी बालू में मिलाकर खड़ी फसल में समान रूप से बिखेरें।
- पिछात सरसों की फसल में लाही (एफिड) का प्रकोप होने की संभावना रहती है। यह कीट पौधों के कोमल भागों जैसे पत्तियों, तनों, कलियों और फलियों का रस चूसता है, जिससे पौधे कमजोर हो जाते हैं और दाने भरने की प्रक्रिया प्रभावित होती है। इसके परिणामस्वरूप उपज में कमी आ सकती है। लाही के नियंत्रण के लिए डाईमेथोएट 30 ई.सी. दवा की 1.0 मिली प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर फसल पर समान रूप से छिड़काव करें।
- अरहर की फसल में फल मक्खी कीट उपज को काफी नुकसान पहुँचाता है। इस कीट के मैगट फलियों के अंदर घुसकर बीजों को खाते हैं, जिससे दाने खराब हो जाते हैं और उनका बाजार मूल्य घट जाता है। प्रभावित स्थानों पर कवक और जीवाणु भी विकसित हो सकते हैं। इस कीट के प्रभावी नियंत्रण के लिए कारटाप हाइड्रोक्लोराइड दवा की 1.5 मिली प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- आम और लीची के बागानों में दीमक मुख्य तने और जड़ों को नुकसान पहुँचाती है, जिससे पौधों की बढ़वार रुक जाती है। इसके नियंत्रण हेतु क्लोरपायरीफॉस 20 ई.सी. दवा की 2.5 मिली प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर मुख्य तने तथा उसके आसपास की मिट्टी में छिड़काव करें। वर्तमान समय में बागानों में फूल और फल आने की अवस्था है, इसलिए हॉपर और पाउडरी मिल्ड्यू से बचाव के लिए इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस.एल. 0. 5 मिली प्रति लीटर पानी तथा घुलनशील गंधक 80 डब्लू.पी. 2 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से पत्तियों पर छिड़काव करें। मार्च माह तक कर्षण क्रिया और सिंचाई से बचें।
- मटर की फसल में फली छेदक कीट का प्रकोप दानों को नुकसान पहुँचाकर उपज में भारी कमी कर सकता है। इस कीट के पिल्लू फलियों में प्रवेश कर अंदर ही अंदर दानों को खाते रहते हैं। इसके प्रबंधन हेतु प्रकाश फंदों का प्रयोग करें तथा प्रति हेक्टेयर 15–20 टी–आकार के पक्षी बैठका लगाएँ। अधिक प्रकोप की स्थिति में क्विनालफॉस 25 ई.सी. या नोवाल्यूरॉन 10 ई.सी. दवा की 1 मिली प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।
- अगात किस्म की आलू की तैयार फसलों की खुदाई समय पर कर लें, जिससे कंदों की गुणवत्ता बनी रहे। बीज वाली फसल में ऊपरी लत्तियों की कटाई करें और खुदाई से 15 दिन पहले सिंचाई बंद कर दें। पिछात आलू की फसल में कटवर्म या कजरा पिल्लू की नियमित निगरानी करते रहें।
- पिछात बोई गई फूलगोभी, पत्तागोभी, गाजर, मूली, मटर, बैंगन, टमाटर एवं मिर्च की फसलों में निराई–गुड़ाई तथा आवश्यकता अनुसार सिंचाई करते रहें। रोगों से बचाव के लिए कार्बेन्डाजिम (वेविस्टीन) 2 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें। साथ ही गरमा सब्जियों की बुआई के लिए खेत की अच्छी तैयारी करें, ताकि समय पर बुआई कर अधिक उत्पादन प्राप्त किया जा सके।

आज का अधिकतम तापमानः 24.2 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 2.8 डिग्री सेल्सियस अधिक	आज का न्यूनतम तापमानः 7.0 डग्री सेल्सियस, सामान्य से 2.2 डिग्री सेल्सियस कम

(डॉ0 ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकारी